Deen Dayal Upadhyaya Gorakhpur University

(Accredited A++ by NAAC)

University in News on 27 September 2024

Dainik Jagran
Page - 02

जन्मभूमि पर मंदिर का दिया प्रमाण, मिली निलंबन की धमकी

राष्ट्रीय संगोष्ठी में पुरातत्वशास्त्री डा. केके मुहम्मद ने साझा की सच के लिए संघर्ष की कहानी

जागरण संवाददाता, गोरखपुर: विवादित ढांचे पर मंदिर होने की बात साक्ष्य के साथ कहना आसान नहीं था। एक स्थापित पुरातत्वशास्त्री होने के बाद भी इस रूप से अपने यजूद का साक्ष्य देना पड़ा। गम-गान पर संघर्ष था। अधिकारियों से लेकर कम्युनिस्ट इतिहासकारों तक का विरोध था। अधिकारियों ने निलंबन की धमकी दी। इतिहासकारों ने झूठ साबित करने की कोशिश की। पर बात सत्यापक थी, इसलिए सुप्रीम कोर्ट तक ने मानी और विवादित स्थल पर भव्य श्रीराम मंदिर का जानामन तैयार हो गया। पद्मश्री डा. केके मुहम्मद ने जब गोरखपुर विश्वविद्यालय के संवाद भवन में सजे आइसोएनआर (इंडियन काउंसिल आफ हिस्टोरिकल रिसर्च) के मंच से राममंदिर निर्माण के लिए संघर्ष में अपने योगदान का संस्मरण सुनाया तो लोगों ने न सिर्फ पूरी गंभीरता से सुना, बल्कि तालियों के जरिये कृतज्ञता भी जाहिर की।

डा. मुहम्मद ने बताया कि विवादित ढांचे के मूल में मंदिर के प्रमाण पाए जाने के दौरान वह मशहूर इतिहासकार प्रो. बीबी लाल की टीम का हिस्सा थे। वह साल 1977 की थी, जब उन्होंने रामजन्मभूमि पर मामला गरमाने के बाद तथ्यों की जांच के लिए गठित टीम में शामिल लोगों के सामने रखी तो इरफान हबीब जैसे इतिहासकारों ने उन्हें झूठा साबित कर दिया और यह कह दिया कि रामजन्मभूमि पर हुए पुरातात्विक कार्य में डा. मुहम्मद की कोई भूमिका नहीं थी। उसके बाद इसकी पुष्टि उन्हें खुद प्रो. बीबी लाल से करानी पड़ी, जो उन दिनों लंदन में थे। चूंकि वह उन दिनों आर्कियोलाजिकल सर्वे आफ इंडिया के महाप्रा कार्यालय में कार्यरत थे, ऐसे में उन्हें अधिकारियों से पहले निलंबन की धमकी मिली, बाद में स्थानांतरण कर दिया गया। 'आर्कियोलाजी आफ रामायण व महाभारत' विषय पर अपनी पर्चा को आगे बढ़ाते हुए डा. मुहम्मद ने कहा कि अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय और जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के मार्क्सवादी इतिहासकारों ने अयोध्या साइट से उत्खनन में प्राप्त अवशेष सामग्री को लेकर मिथ्या प्रचार किया। यह न तो पुरातत्वविद थे और न ही वह पुरातत्व समाजी के वैज्ञानिक विश्लेषण को समझने में समर्थ थे। उन्होंने मंच से एक बार फिर स्पष्ट किया कि अयोध्या से उत्खनन में मिली मूर्तियां व स्तंभ यानी किसी हिंदू धार्मिक स्थल के मौजूद होने के एक अलग दौर के कारकूर भी भारत एक सेकुलर देश है। उन्होंने कहा कि हिन्दू धर्म में समृद्धि एवं वैभव का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि दिल्ली के कुतबुल इस्लाम मंदिर में उन्हें मंदिर के प्रमाण मिले हैं। जब उन्होंने यह बात उजागर की तो उन्हें मुस्लिम समाज का कड़ा विरोध झेलना पड़ा। डा. मुहम्मद ने शसिनपुर और इंग्लाम को खोदाई से जुड़े अपने अनुभव को भी साझा किया और कहा कि एक पुरातत्वशास्त्री कभी सुनी-सुनाई बातों व किवदंतियों पर विश्वास नहीं करता। मिला साक्ष्य के यह कुछ नहीं कहता। उन्होंने चित्रों की प्रस्तुति से भी व्याख्यान को पुष्ट किया। व्याख्यान में उन्होंने जानवारों व मगरा से उत्खनित शोध पत्रों को पढ़ा गया। इस सत्र की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. भुवन झा ने की। संचालन डा. गोवि के डिवि विभाग के डा. स्नेहा शुक्ल और प्रतिवेदन डा. रितेश्वर तिवारी ने किया। पहला पर्चा डा. स्नेहा शुक्ल ने पढ़ा उसी दाम में अरिवी ने 'ऋग्वेद और भगवद्गीता के निष्काम कर्म योग की प्रासंगिकता' विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। हिंदी विभाग के रहमाक आयाशे डा. अभिषेक शुक्ल ने 'स्वतंत्रता स्वर्ग का प्रतिबंधित साहित्य' विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने ऑन पत्र में ऐतिहासिक व साहित्यिक संदर्भ में प्रतिबंधित साहित्य के दायरे को बढ़ा कर दो देशों की बात की।

संवाद भवन में आयोजित संगोष्ठी में अभिषेक शुक्ल को सर्वोत्तम वक्ता घोषणा डा. केके मुहम्मद • जागरण

तकनीकी सत्रों में उजागर हुए इतिहास के अनछुए पहलू

जासं, गोरखपुर : आइसीएचआर और गोरखपुर विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग की ओर से आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे व अंतिम दिन गुरुवार को तकनीकी सत्रों में भी इतिहास के अनेक अनछुए पहलू उजागर हुए। विद्वतजनों व इतिहासकारों ने ऐसे तथ्यों को इतिहास के पन्ने पर लाने के लिए मंथन किया। पहले तकनीकी सत्र में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के आचार्य प्रो. क्रिस्टू दास ने मद्रास प्रेसीडेंसी के क्रांतिकारी आंदोलन पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि औपनिवेशिक धारणा के दबाव में मद्रास के राष्ट्रवादी क्रांतिकारी आंदोलन को इतिहास में उचित स्थान नहीं मिल सका। वाचीनाथन अय्यर द्वारा तिरुनेलवेली के कलेक्टर रार्बट ऐश की हत्या और विंचरम पिल्लई की स्वदेश मित्रम अखबार की क्रांतिकारी पत्रकारिता के माध्यम से क्रांतिकारी आंदोलन की सांस्कृतिक व आध्यात्मिक पृष्ठभूमि को शोधार्थियों से साझा किया।

प्रो. गोपाल प्रसाद फिर बने गोवि के मुख्य नियंता

गोरखपुर: दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विवि के राजनीतिशास्त्र विभाग के प्रो. गोपाल प्रसाद को विश्वविद्यालय का मुख्य नियंता बनाया गया है। कुलपति के निर्देश पर गुरुवार को कुलसचिव प्रो. शांतनु रस्तोगी ने प्रो. गोपाल प्रसाद इस बाबत आदेश जारी कर दिया। आदेश के मुताबिक प्रो. गोपाल प्रसाद का कार्यकाल एक वर्ष या अगले आदेश तक के लिए होगा। उन्होंने प्रो. सतीश चंद्र पांडेय से कार्यभार ग्रहण कर लिया। प्रो. गोपाल प्रसाद इससे पहले भी दो साल और एक साल के लिए दो बार मुख्य नियंता का दायित्व संभाल चुके हैं। पूर्व कुलपति प्रो. राजेश सिंह के कार्यकाल के दौरान इस्तीफा दे दिया था, जिसके बाद प्रो. सतीश पांडेय को यह जिम्मेदारी दी गई थी।

गोवि में वीफार्म व डीफार्म में प्रवेश 30 से

गोरखपुर: दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के वीफार्म तथा डीफार्म पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए आयोजित परीक्षा का परिणाम गुरुवार को घोषित कर दिया गया। प्रमाण पत्रों का सत्यापन और प्रवेश 30 सितंबर से होगा। गोवि के प्रवेश प्रकोष्ठ के समन्वयक प्रो.हर्ष कुमार सिन्हा ने बताया कि अभ्यर्थी अपना रिजल्ट विश्वविद्यालय के प्रवेश पोर्टलwww.dduguadmission.in से डाउनलोड कर सकते हैं। दोनों ही पाठ्यक्रमों में 66-66 सीटें उपलब्ध हैं। प्रमाणपत्रों के सत्यापन, प्रवेश कार्यक्रम और फीस से संबंधित सभी विवरण अभ्यर्थी के परीक्षा परिणाम प्रपत्र पर उल्लिखित होंगे।

Amar Ujala Select Page -02, 04

'मथुरा और ज्ञानवापी मस्जिद के स्थान को उपहार की तरह सौंप दें मुसलमान'

डॉ. केके मोहम्मद बोले-अयोध्या में हिंदू मंदिर के मिले थे साक्ष्य, सबै में उन्हें छिपाया जा रहा था

गोरखपुर। प्रेजन्टर कालीनर ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च (आइसीएचआर) के सदस्य व पद्मश्री डॉ केके मोहम्मद ने कहा कि वे भी ऐतिहासिक विकास गुजरी सदियों में हजा, सुलतानों को उसके सबक लेकर बढ़ना और उपकारी मौजूद के स्थान को खुद ही हिंदुओं को उपहार भी तरह पीश देना चाहिए।

उन्होंने जो पीश प्रकाश है, उसे कहीं अपने उपयुक्त स्थान पर स्थानांतरित करने के लिए मुसलमानों को आगे आना चाहिए। इससे वाकार एवं धर्म समाज से भी सहयोग मिल सकेगा। इस व्याख्यान का गुप्त मायने यहा जाना चाहिए।

पद्मश्री डॉ केके मोहम्मद कुरुक्षेत्रीय की गोरखपुर विश्वविद्यालय और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली की ओर से आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में व्याख्यान दान को संबोधित कर रहे थे। डॉ. मोहम्मद ने कहा कि अयोध्या मुक्तिमान विश्वविद्यालय एवं जेएनयू के जेएनयू के इतिहासकारों ने अयोध्या साइट से उत्खनन में मिली मूर्तियां व स्तंभ यानी किसी हिंदू धार्मिक स्थल के मौजूद होने के एक अलग दौर देने के कारकूर भी भारत एक सेकुलर देश है। मुसलमानों को यह चाहिए कि जो भी पीश प्रकाश है, उसे कहीं अपने उपयुक्त स्थान पर स्थानांतरित करने के लिए मुसलमान लोगों को आगे आना चाहिए। इससे वाकार एवं धर्म समाज से भी सहयोग मिल सकेगा। इस व्याख्यान का गुप्त मायने यहा जाना चाहिए।

राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित करते पद्मश्री डॉ. केके मोहम्मद

राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन आयोजित विशिष्ट व्याख्यान में उपस्थित लोग।

आर्कियोलॉजिकल सर्वे आफ इंडिया की हालात दीन नहीं

डॉ. मोहम्मद ने कहा कि आर्कियोलॉजिकल सर्वे आफ इंडिया (एएसआई) की वर्तमान हालत दीन नहीं है। वाकार को इस पर विचार करना चाहिए। उन्होंने कहा कि इसकी वर्तमान दशा को सुधारने के लिए एएसआई के वर्तमान पद की गरिमा को आगे लाना होगा। उन्होंने कहा कि इस संगोष्ठी में आगे चलकर इस पर विचार किया जाएगा।

मिसिंग पेज एक षड्यंत्र है : डॉ. बालमुकुंद

समापन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. बालमुकुंद पांडेय ने कहा कि "मिसिंग लिंक" तो स्वाभाविक है लेकिन "मिसिंग पेज" एक षड्यंत्र है। सन 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई है। जो न सिर्फ अपेक्षाओं व शोधार्थियों को, बल्कि समाज को भी चिंतन करने के लिए बहुत कुछ दे गया। अकादमिक संवाद ही किसी वैश्विक संस्थान को अपने सामने में जीवित रखता है। जो लोग इतिहास के विद्यार्थी नहीं हैं उनके लिए भी यह संगोष्ठी मील का पत्थर साबित हुई है। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद का कार्य बड़ा एवं बुनियादी महत्व का है। सत्र का संचालन भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सदस्य सचिव डॉ ओम जी उपाध्याय ने किया।

Amar Ujala
Page - 07

संगोष्ठी से निकला दहकता इस्पाती दस्तावेज : प्रो. पूनम

गोरखपुर विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में कुलपति ने रखे विचार

संवाद न्यूज एजेंसी

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में इतिहास विभाग में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता कुलपति प्रोफेसर पूनम टंडन की। उन्होंने कहा कि इस संगोष्ठी ने सही मायने में अपने लक्ष्यों को हासिल किया है।

उन्होंने कहा कि हमारा सदियों का अतीत इन दो दिनों के राष्ट्रीय संगोष्ठी में इस्पाती दस्तावेज की तरह हमारे समक्ष प्रस्तुत हुआ है। जो न सिर्फ अपेक्षाओं व शोधार्थियों को, बल्कि समाज को भी चिंतन करने के लिए बहुत कुछ दे गया। अकादमिक संवाद ही किसी वैश्विक संस्थान को अपने सामने में जीवित रखता है। जो लोग इतिहास के विद्यार्थी नहीं हैं उनके लिए भी यह संगोष्ठी मील का पत्थर साबित हुई है। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद का कार्य बड़ा एवं बुनियादी महत्व का है। सत्र का संचालन भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सदस्य सचिव डॉ ओम जी उपाध्याय ने किया।

समापन सत्र में मंचासीन मुख्य अतिथि डॉ. बालमुकुंद व अन्य। फोटो: विश्वविद्यालय

तकनीकी सत्र में 11 शोध पत्रों का वाचन

द्वितीय तकनीकी सत्र में विभिन्न महाविद्यालय व विश्वविद्यालय के शिक्षकों व शोधार्थियों के द्वारा कुल 11 शोध पत्रों को पढ़ा गया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. भुवन झा, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा किया गया।

एएसआई की वर्तमान हालात ठीक नहीं

सेमीनार में डॉ. केके मोहम्मद ने कहा कि एएसआई की वर्तमान हालत ठीक नहीं है। उन्होंने ने प्रश्न पुरातात्विक अवशेषों की रिलेवेन्स की सर्वेक्टिंग, ब्रीडिंग और रिकार्डिंग की भी जरूरत है, जिससे पुरातत्व अवशेषों को विशेष महत्व मिल सके और भारतीय सभ्यता-संस्कृति को व्यापक फैलने पर रोकाकिन किया जा सके।

मद्रास के क्रांतिकारियों को इतिहास में नहीं मिला उचित स्थान : प्रो. क्रिस्टू

दूसरे दिन के प्रथम तकनीकी सत्र में जेएनयू से आए प्रोफेसर क्रिस्टू दास ने अपने उद्बोधन में मद्रास प्रेसीडेंसी के क्रांतिकारी आंदोलन पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि औपनिवेशिक धारणा के दबाव में मद्रास के राष्ट्रवादी क्रांतिकारी आंदोलन को इतिहास में उचित स्थान नहीं मिला। उन्होंने वाचीनाथन अय्यर द्वारा तिरुनलवेली के कलेक्टर रॉबर्ट ऐश की हत्या एवं चिदंबरम पिल्लई की स्वदेश मित्रम अखबार की राष्ट्रवादी पत्रकारिता के माध्यम से क्रांतिकारी आंदोलन की सांस्कृतिक व आध्यात्मिक पृष्ठभूमि को शोधार्थियों से साझा किया।

मिसिंग पेज एक षड्यंत्र : डॉ. बालमुकुंद

समापन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. बालमुकुंद पांडेय ने कहा कि "मिसिंग लिंक" तो स्वाभाविक है लेकिन "मिसिंग पेज" एक षड्यंत्र है। सन 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई है। ऐसी स्थिति में सन 1926 में कांग्रेस के आध्यात्मिक अध्यक्ष के द्वारा यह कहा जाना "नेशन सेकिंग" हो रहा है। और 1942 के बाद "डिस्कवरी ऑफ इंडिया" में कहा गया कि "कब्रिस्ले आते एए कारवां बनता गया"। तो यहां पर समाज उठता है कि जब भारत राष्ट्र था ही नहीं, तो सन 1885 में किस भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई? भारत का पहला असहयोग आंदोलन राम सिंह कूका के द्वारा शांतिपूर्ण ढंग से सफलतापूर्वक चलाया गया था। जो 1859 से 1883 तक चला। वासुदेव बलवंत फड़के ने भारत छोड़ो आंदोलन 1876 से 1883 तक चला था उसी का विस्तार 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन था। 10 फरवरी, 1917 को रमाकांत शुक्ल ने महात्मा गांधी को चंपारण सत्याग्रह में अवगत किया था। उसी अभियान पत्र में उन्होंने पहली बार "महात्मा" संबोधित किया था। जबकि इतिहास के पन्नों में लिखा गया कि 'चंपारण सत्याग्रह के सफलता के बाद रवींद्रनाथ टैगोर ने गांधी को "महात्मा" की उपाधि प्रदान की।

हिस्ट्री राइटिंग का टेंपलेट बदलने की जरूरत

समापन सत्र के विशिष्ट अतिथि पत्रकार व लेखक अनंत विजय ने कहा कि हिस्ट्री राइटिंग का टेंपलेट बदलने की जरूरत है न कि इतिहास को मिटाने की। यह दो प्रकार की बातें हैं। जिसका पकड़ा उसको पलटना है। इसके साथ ही हमें अपने इतिहास को समझने में मदद करेगा। बताया कि पाठ्यक्रम में पंजीकरण की प्रक्रिया जल्द ही शुरू होगी, और केवल रिसर्च स्कॉलर और पीजी छात्र ही इसमें भाग ले सकेंगे।

कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि यह पाठ्यक्रम छात्रों के लिए महत्वपूर्ण अवसर साबित होगा। वैल्यू एडेड कोर्स के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति एक संवेदनशीलता आएगी और विषय के प्रति भी छात्रों की अभिरुचि बढ़ेगी।पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता आज के समय की आवश्यकता है।

Hindustan
Page - 01, 02, 04

संगोष्ठी के समापन सत्र में उपस्थित कुलपति प्रो. पूनम टंडन, डॉ. बालमुकुंद व अन्य।

मील का पत्थर साबित हुई संगोष्ठी : प्रो. पूनम टंडन

गोरखपुर, निज संवाददाता। राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए डीडीयू की कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि इस संगोष्ठी ने सही मायने में अपने लक्ष्यों को हासिल किया है। हमारा सदियों का अतीत इन दो दिनों के राष्ट्रीय संगोष्ठी में इस्पाती दस्तावेज की तरह हमारे समक्ष प्रस्तुत हुआ है। जो न सिर्फ अध्येताओं व शोधार्थियों को, बल्कि समाज को भी चिंतन करने के लिए बहुत कुछ दे गया। जो लोग इतिहास के विद्यार्थी नहीं हैं उनके लिए भी यह संगोष्ठी मील का पत्थर साबित हुई है। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद का कार्य बड़ा एवं बुनियादी महत्व का है। सत्र का संचालन भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सदस्य सचिव डॉ ओम जी उपाध्याय ने किया।

संगोष्ठी में बोले ऑर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के उत्तर जोन के सेवानिवृत्त निदेशक

मथुरा और ज्ञानवापी हिन्दुओं को सौंपा जाना चाहिए : केके मुहम्मद

राष्ट्रीय गोष्ठी

- आईसीएचआर-डीडीयू की ओर से हुआ राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन

गोरखपुर, निज संवाददाता। आर्कियोलॉजिकल सर्वे आफ इंडिया के उत्तर जोन के सेवानिवृत्त निदेशक पद्मश्री केके मुहम्मद ने ज्ञानवापी और मथुरा को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि जो भी ऐतिहासिक विकास गुजरी सदियों में हुआ, उससे सबक लेकर मुसलमानों को मथुरा और ज्ञानवापी के स्थान को हिंदुओं को खुद ही उपहार की तरह सौंप देना चाहिए।

डॉ. केके मुहम्मद आईसीएचआर व डीडीयू के इतिहास विभाग के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के आखिरी दिन व्याख्यान दे रहे थे। उन्होंने कहा कि मुसलमानों की जो पवित्र इमारत है, उसे कहीं अन्य उपयुक्त स्थल पर स्थानांतरित करने के लिए उन्हें आगे आना चाहिए। इस स्थानांतरण प्रक्रिया में पवित्रता एवं सम्मान का ध्यान रखा जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि इतिहास में कुछ गलतियां हुई हैं, जो उनमें सुधार होना चाहिए। कहा कि मुगलकाल में बड़ी संख्या में हिन्दुओं ने इस्लाम कुबूल किया। अयोध्या में जो मंदिर था, मुसलमान बनने के बाद लोगों को लगा होगा कि अब यह मस्जिद होनी चाहिए। इसलिए ऐसा किया गया होगा। उन गलतियों के लिए आज का मुसलमान जिम्मेदार नहीं है।

उन्होंने कहा कि मार्क्सवादी इतिहासकारों ने अयोध्या साइट से उत्खनन में प्राप्त अवशेषों सामग्री को लेकर मिथ्या प्रचार किया है।

व्याख्यान देते डॉ. केके मोहम्मद।

संवाद भवन में राष्ट्रीय सेमिनार में मौजूद कुलपति, शिक्षक, अतिथि व छात्र- छात्राएं।

इतिहास का 'मिसिंग पेजेज' एक षड्यंत्र

- इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय संगठन सचिव ने व्यक्त किए विचार
- बोले-पहला असहयोग आंदोलन 1859 से 1883 तक चला

गोरखपुर, निज संवाददाता। अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय सगंठन सचिव डॉ. बालमुकुंद पांडेय ने कहा कि इतिहास का 'मिसिंग लिंक' तो स्वाभाविक है लेकिन 'मिसिंग पेज' एक षड्यंत्र है। भारत का पहला असहयोग आंदोलन राम सिंह कूका के द्वारा शांतिपूर्ण ढंग से सफलतापूर्वक चलाया गया था जो 1859 से 1883 तक चला। भारत छोड़ो आंदोलन वासुदेव बलवंत फड़के के द्वारा 1876 से 1883 तक चला था उसी का विस्तार 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन था।

डॉ बालमुकुंद राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सवाल उठता है, जब भारत राष्ट्र था ही नहीं, तो सन 1885 में किस भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई? 10 फरवरी, 1917 को रमाकांत शुक्ल ने महात्मा गांधी को चंपारण सत्याग्रह में अवगतित किया था। उसी अभियान पत्र में उन्होंने पहली बार 'महात्मा' संबोधित किया था। जबकि इतिहास के पन्नों में लिखा गया कि चंपारण सत्याग्रह के सफलता के बाद रवींद्रनाथ टैगोर ने गांधी को 'महात्मा' की उपाधि प्रदान की।

हिस्ट्री राइटिंग का टेंपलेट बदलने की जरूरत

समापन सत्र के विशिष्ट अतिथि पत्रकार व लेखक अनंत विजय ने कहा कि हिस्ट्री राइटिंग का टेंपलेट बदलने की जरूरत है न कि इतिहास को मिटाने की। यह दो प्रकार की बातें हैं। जिसका पकड़ा उसको पलटना है। इसके साथ ही हमें अपने इतिहास को समझने में मदद करेगा। बताया कि पाठ्यक्रम में पंजीकरण की प्रक्रिया जल्द ही शुरू होगी, और केवल रिसर्च स्कॉलर और पीजी छात्र ही इसमें भाग ले सकेंगे।

कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि यह पाठ्यक्रम छात्रों के लिए महत्वपूर्ण अवसर साबित होगा। वैल्यू एडेड कोर्स के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति एक संवेदनशीलता आएगी और विषय के प्रति भी छात्रों की अभिरुचि बढ़ेगी।पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता समय की आवश्यकता है।

- प्रो. पूनम टंडन, कुलपति, डीडीयू

तकनीकी सत्र में किया गया 11 शोध पत्रों का वाचन

डीडीयू

गोरखपुर, निज संवाददाता। डीडीयू में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन द्वितीय तकनीकी सत्र में विभिन्न विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के शिक्षकों व शोधार्थियों द्वारा 11 शोध पत्रों का वाचन किया गया। सत्र की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. भुवन झा ने की।

डीडीयू के हिन्दी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. अभिषेक शुक्ल ने 'स्वतंत्रता संघर्ष का प्रतिबंधित साहित्य' विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। डॉ. सर्वेश शुक्ल ने भी शोध पत्र पढ़ा। इससे पूर्व प्रथम सत्र में जेएनयू के प्रो. क्रिस्टू दास ने मद्रास प्रेसीडेंसी के क्रांतिकारी आंदोलन पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि औपनिवेशिक धारणा के दबाव में मद्रास के राष्ट्रवादी क्रांतिकारी आंदोलन को इतिहास में उचित स्थान नहीं मिला। उन्होंने वाचीनाथन अय्यर द्वारा तिरुनलवेली के कलेक्टर रॉबर्ट ऐश की हत्या एवं चिदंबरम पिल्लई की स्वदेश मित्रम अखबार के माध्यम से क्रांतिकारी आंदोलन की सांस्कृतिक व आध्यात्मिक पृष्ठभूमि को साझा किया।

प्रो. गोपाल प्रसाद बने डीडीयू के मुख्य नियंता

गोरखपुर। गोरखपुर विश्वविद्यालय के राजनीतिशास्त्र विभाग के प्रो. गोपाल प्रसाद को विश्वविद्यालय का मुख्य नियंता बनाया गया है। गुरुवार को कुलसचिव प्रो. शांतनु रस्तोगी ने आदेश जारी कर दिया। प्रो. गोपाल प्रसाद का कार्यकाल एक वर्ष या अगले आदेश तक के लिए होगा। अब तक प्रो. सतीश चन्द्र पाण्डेय डीडीयू के नियंता थे। एक वर्ष का कार्यकाल पूर्ण होने पर प्रॉक्टर की जिम्मेदारी प्रो. गोपाल को दी गई है। उन्होंने गुरुवार को ही कार्यभार ग्रहण कर लिया।

Inext Page -01

डीडीयू: वैल्यू एडेड कोर्स के रूप में शुरू होगा पर्यावरणीय मानविकी

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में स्नातकोत्तर के छात्रों और शोधार्थियों के लिए 'पर्यावरणीय मानविकी' पर 15 दिनों का विशेष मूल्य वर्धित पाठ्यक्रम अक्तूबर के द्वितीय सप्ताह से शुरू होगा। विभागाध्यक्ष प्रो. अजय शुक्ल ने बताया कि इसका उद्देश्य छात्रों को पर्यावरणीय मुद्दों और मानविकी के बीच के संबंधों पर गहन समझ विकसित कराना है।

इसमें पर्यावरणीय न्याय, जलवायु परिवर्तन, पारिस्थितिकी और संधारणीय भविष्य, जल संकट ऊर्जा एवं पर्यावरण, एंथ्रोपोसीन, प्रकृति लेखन जैसे समसामयिक विषय शामिल होंगे। उन्होंने बताया कि पाठ्यक्रम में छात्रों को पर्यावरण के साहित्यिक और सांस्कृतिक पहलुओं के साथ ही पर्यावरणीय सिद्धांतों से भी अवगत कराया जाएगा। यह छात्रों को वैश्विक स्तर पर हो रहे पर्यावरणीय संकटों और उनके सांस्कृतिक प्रभावों को समझने में मदद करेगा।

नई शिक्षा नीति के तहत साहित्य और पर्यावरण के संबंधों पर केंद्रित है कोर्स

2 क्रेडिट का होगा कोर्स

इसमें पंजीकरण की प्रक्रिया जल्द ही शुरू होगी। यह दो क्रेडिट का कोर्स होगा। पर्यावरण और साहित्य के विभिन्न पक्षों को शामिल करते हुए इसमें कुल 15 थीम हैं। कोर्स की मेथोडोलॉजी भी बनाई गई है, जिसके तहत दो घंटे का प्रतिदिन व्याख्यान एवं विमर्श होगा। प्रेजेंटेशन, क्रिटिकल थिंकिंग, निबंध लेखन, ग्रुप डिस्कशन, लेक्चर रिपोर्ट आदि होंगे। अंक के आधार पर प्रमाण पत्र में ग्रेड दिया जाएगा।

वैल्यू एडेड कोर्स के रूप में शुरू होगा पर्यावरणीय मानविकी

संवाद न्यूज एजेंसी

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में स्नातकोत्तर के छात्रों और शोधार्थियों के लिए 'पर्यावरणीय मानविकी' पर 15 दिनों का विशेष मूल्य वर्धित पाठ्यक्रम अक्तूबर के द्वितीय सप्ताह से शुरू होगा। विभागाध्यक्ष प्रो. अजय शुक्ल ने बताया कि इसका उद्देश्य छात्रों को पर्यावरणीय मुद्दों और मानविकी के बीच के संबंधों पर गहन समझ विकसित कराना है।

इसमें पर्यावरणीय न्याय, जलवायु परिवर्तन, पारिस्थितिकी और संधारणीय भविष्य, जल संकट ऊर्जा एवं पर्यावरण, एंथ्रोपोसीन, प्रकृति लेखन जैसे समसामयिक विषय शामिल होंगे। उन्होंने बताया कि पाठ्यक्रम में छात्रों को पर्यावरण के साहित्यिक और सांस्कृतिक पहलुओं के साथ ही पर्यावरणीय सिद्धांतों से भी अवगत कराया जाएगा। यह छात्रों को वैश्विक स्तर पर हो रहे पर्यावरणीय संकटों और उनके सांस्कृतिक प्रभावों को समझने में मदद करेगा।

दो क्रेडिट का होगा कोर्स

इसमें पंजीकरण की प्रक्रिया जल्द ही शुरू होगी। यह दो क्रेडिट का कोर्स होगा। पर्यावरण और साहित्य के विभिन्न पक्षों को शामिल करते हुए इसमें कुल 15 थीम हैं। कोर्स की मेथोडोलॉजी भी बनाई गई है जिसके तहत दो घंटे का प्रतिदिन व्याख्यान एवं विमर्श होगा। प्रजेंटेशन, क्रिटिकल थिंकिंग, निबंध लेखन, लेक्चर रिपोर्ट आदि होंगे। अंक के आधार पर प्रमाणपत्र में ग्रेड दिया जाएगा।

प्रो. गोपाल प्रसाद बने डीडीयू के मुख्य नियंता

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के राजनीतिशास्त्र विभाग के प्रो. गोपाल प्रसाद को विश्वविद्यालय का मुख्य नियंता बनाया गया है। बृहस्पतिवार को कुलसचिव प्रो. शांतनु रस्तोगी ने आदेश जारी कर दिया। आदेश के मुताबिक प्रो. गोपाल प्रसाद का कार्यकाल एक वर्ष या अगले आदेश तक के लिए होगा। अब तक प्रो. सतीश चंद्र पांडेय डीडीयू के नियंता थे। संवाद

बी और डी फॉर्मा प्रवेश परीक्षा का परिणाम जारी

गोरखपुर। डीडीयू के बी. फार्मा तथा डी. फॉर्मा पाठ्यक्रम की प्रवेश परीक्षा का परिणाम बृहस्पतिवार को घोषित कर दिया गया। प्रमाण पत्रों का सत्यापन और प्रवेश 30 सितंबर को होगा। प्रवेश प्रकोष्ठ के समन्वयक प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा ने बताया कि अभ्यर्थी अपना रिजल्ट विश्वविद्यालय के प्रवेश पोर्टल www.dduguadmission.in से डाउनलोड कर सकते हैं। संवाद

पोर्टल पर कराएं रजिस्ट्रेशन और पाएं ऑन जॉब ट्रेनिंग का मौका

gorakhpur@inext.co.in

GORAKHPUR (26 Sept): ट्रेड सम्बेक्ट्स में स्टूडेंट्स को किल्ड करने के लिए नेशनल अप्रेंटिसशिप ट्रेनिंग स्कीम (नेट्स) के अंतर्गत ट्रेनिंग दी जा रही है. इसके तहत ट्रेड डिसिप्लिन की पढ़ाई करने वाले स्टूडेंट्स को छह महीने से एक साल तक ऑन जॉब ट्रेनिंग (ओजेटी) के जरिए प्रैक्टिकल ज्ञान देना है. इसमें ऐसलिंग, वेल्डिंग्स वाइंडिंग्स और फूडी स्टूडेंट्स को ओजेटी, हैंड्स ऑन प्रैक्टिस के जरिए खुद को सशक्त बनाना है. कुछ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में भी ओजेटी अनिवार्य है. अब सभी इंस्टीट्यूट में इसे लागू करने की तैयारी है. स्टूडेंट्स को ओजेटी का मौका देने के लिए नेट्स 2.0 पोर्टल लांच किया गया है. यह पोर्टल स्टूडेंट्स को ओजेटी के लिए एम्पलॉयर से डायरेक्ट मिलाएगा. फूडी की और से सभी हाइ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट्स को पोर्टल पर डीबंचुरेड के संबंध में नोटिस जारी कर दी गई है. इसमें लास्ट सिटी में पढ़ने वाले साढ़े तीन लाख स्टूडेंट्स को बेनिफिट मिलेगा. छात्रों को पोर्टल पर अपनी डिग्रीज धारकर रजिस्ट्रेशन करना होगा. नई व्यवस्था की डीडीयू, रुपाएगपन्यूट्री संगठ सभी संबद्ध कॉलेजों में इसी सेशन से लागू किया जा रहा है.

स्टूडेंट्स को मिलेंगी ये सुविधाएं

फूडीसी के कोर्डेटरों प्रो. मनी